

राजस्थान में पीली और हरी जुकीनी की उन्नत खेती: आधुनिक किसानों के लिए लाभकारी विकल्प

*राकेश चौधरी, नवीन लामरोड, मुकेश बटेश्वर, विकास यादव एवं राहुल यादव

कृषि महाविद्यालय, नागौर, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान, भारत)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: rakeshchoudhary012210@gmail.com

जुकीनी (Zucchini) एक महत्वपूर्ण आधुनिक सब्जी फसल है, जो कुकुर्बिटसी परिवार से संबंधित है। यह मुख्य रूप से *Cucurbita pepo* प्रजाति की फसल है। भारत में इसका प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है, विशेषकर शहरी क्षेत्रों और होटलों में इसकी मांग अधिक है। राजस्थान जैसे शुष्क एवं अर्ध-शुष्क क्षेत्र में, जहाँ पारंपरिक फसलों में जोखिम अधिक होता है, वहाँ जुकीनी एक कम अवधि, कम पानी और अधिक लाभ देने वाली फसल के रूप में उभर रही है।

महत्व

- यह एक उच्च मूल्य वाली सब्जी है, जिससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है।
- फसल अवधि बहुत कम (40-60 दिन), जिससे जल्दी आय प्राप्त होती है।
- होटल, मॉल, सुपरमार्केट और रेस्टोरेंट में इसकी मांग लगातार बढ़ रही है।
- पॉलीहाउस एवं नेट हाउस खेती के लिए भी उपयुक्त।
- यह फसल फसल विविधीकरण में मदद करती है।
- ऑफ-सीजन उत्पादन से किसान 2-3 गुना अधिक मुनाफा कमा सकते हैं।
- निर्यात की दृष्टि से भी संभावनाएं मौजूद हैं।



राजस्थान में उत्पादन क्षेत्र

राजस्थान में अभी यह फसल व्यावसायिक स्तर पर सीमित है, लेकिन तेजी से विस्तार हो रहा है।

प्रमुख उत्पादन क्षेत्र:

- जोधपुर (Jodhpur) – ड्रिप सिंचाई के साथ सफल खेती
- नागौर (Nagaur) – सब्जी उत्पादन के उभरते क्षेत्र
- अजमेर (Ajmer) – शहरी बाजार के कारण अधिक मांग
- जयपुर (Jaipur) – होटल और सुपरमार्केट सप्लाई
- उदयपुर (Udaipur) – पहाड़ी क्षेत्रों में भी प्रयोग
वर्तमान में इसकी खेती मुख्यतः प्रगतिशील किसानों द्वारा की जा रही है।

प्रमुख किस्में

(A) हरी जुकीनी

- Pusa Green Zucchini – जल्दी पकने वाली, अधिक उत्पादन
- Arka Mangal – रोग प्रतिरोधी, आकर्षक फल

(B) पीली जुकीनी

- Golden Zucchini – चमकीला पीला रंग, बाजार में उच्च मांग
- Yellow Bush Zucchini – झाड़ीदार पौधे, छोटे खेतों के लिए उपयुक्त
संकर (Hybrid) किस्में अधिक उत्पादन और गुणवत्ता देती हैं।
- (Orelia F1)

उत्पादन

- औसत उत्पादन: 80–120 क्विंटल/हेक्टेयर
- उन्नत तकनीक (ड्रिप + मल्लिचिंग) से: 120–150 क्विंटल/हेक्टेयर
- तुड़ाई: बुवाई के 40–50 दिन बाद शुरू
- कुल तुड़ाई अवधि: 30–40 दिन
समय पर तुड़ाई करने से गुणवत्ता और कीमत दोनों बढ़ती हैं।

उपयुक्त जलवायु एवं वातावरण

- जलवायु: गर्म एवं समशीतोष्ण
- तापमान: 20°C – 30°C सर्वोत्तम
- 10°C से कम तापमान पर वृद्धि रुक जाती है
- पाला (Frost) अत्यंत हानिकारक

मिट्टी

- अच्छी जल निकासी वाली दोमट या बलुई दोमट मिट्टी
- pH मान: 6.0 – 7.5
- जलभराव से फसल खराब हो सकती है

बुवाई एवं कृषि क्रियाएँ

बुवाई का समय

- खरीफ: जून–जुलाई
- रबी: अक्टूबर–नवंबर
- ज़ायद: जनवरी–फरवरी

बीज दर

- 1.5–2.5 किग्रा/हेक्टेयर

दूरी

- पंक्ति से पंक्ति: 60-90 सेमी
- पौधे से पौधे: 45-60 सेमी

सिंचाई

- ड्रिप सिंचाई सर्वोत्तम
- 4-5 दिन के अंतराल पर सिंचाई

खाद एवं उर्वरक

- गोबर खाद: 15-20 टन/हेक्टेयर
- NPK: 100:60:60 किग्रा/हेक्टेयर

खाने में महत्व

- विटामिन A, C, B-कॉम्प्लेक्स से भरपूर
- पोटैशियम, मैग्नीशियम जैसे खनिज तत्व
- कम कैलोरी (Low calorie food) – वजन घटाने में सहायक
- पाचन तंत्र को मजबूत बनाता है
- डायबिटीज और हृदय रोगियों के लिए लाभकारी

विशेषताएँ

- जल्दी तैयार होने वाली नकदी फसल
- कम पानी में भी सफल उत्पादन
- आकर्षक रंग (पीला और हरा) – बाजार में अधिक कीमत
- कीट एवं रोग अपेक्षाकृत कम
- पॉलीहाउस में सालभर उत्पादन संभव
- निर्यात योग्य गुणवत्ता

कीट एवं रोग प्रबंधन**प्रमुख कीट:**

- फल मक्खी
- एफिड (Aphids)

नियंत्रण:

- नीम तेल का छिड़काव
- फेरोमोन ट्रैप का उपयोग

प्रमुख रोग:

- पाउडरी मिल्ड्यू
- डाउनी मिल्ड्यू

नियंत्रण: उचित फफूंदनाशी का प्रयोग

विपणन एवं लाभ

- होटल, रेस्टोरेंट, मॉल में अधिक मांग
- मंडियों में सामान्य सब्जियों से 2-3 गुना अधिक कीमत
- प्रति हेक्टेयर अच्छा शुद्ध लाभ संभव

निष्कर्ष

राजस्थान में पीली और हरी जुकीनी की खेती एक आधुनिक और लाभकारी विकल्प है। उचित तकनीक, सिंचाई और बाजार प्रबंधन के साथ किसान कम समय में अधिक आय प्राप्त कर सकते हैं। यह फसल न केवल पोषण प्रदान करती है, बल्कि किसानों की आर्थिक स्थिति को भी सुदृढ़ बनाती है।